International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-10, Issue-1 Jan-Feb-2023
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

चन्द्रेश्वर प्रसाद [1*], डा.दीपा राणा [2]**
शोधार्थी [1*], शोध निर्देशिका [2**]
स्कूल ऑफ एजूकेशन [1,2], शोभित इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्जीनियरिंग एण्ड टैक्नोलॉजी
(डीम्ड–टू–बी यूनिवर्सिटी) मोदीपुरम (मेरठ)

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र में मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध के न्यादर्श का चुनाव उद्देश्यपूर्ण विधि द्वारा किया गया। न्यादर्श के रूप में कुल 80 इकाईयों को लिया गया है। जिसमें 40 छात्र तथा 40 छात्राओं को चयनित किया गया है। शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। आंकडों के एकत्रीकरण हेतु शोधार्थी द्वारा निर्मित 'समायोजन अनुसूची' का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है। शोध परिणाम यह बताते है कि मूकबधिर छात्र व छात्राओं के समायोजन के सामाजिक एवं संवेगात्मक पक्ष में असमानाता पायी जाती है जबकि शैक्षिक समायोजन में समानता पायी जाती है।

कुंजी शब्द– मूक बधिर छात्र एवं छात्रायें, सामाजिक समायोजन, शैक्षिक समायोजन, संवेगात्मक समायोजन

प्रस्तावना–

शिक्षा मानव के जीवन को सुधारने व सँवारनें में अहम भूमिका निभाती है जिससे बालक उचित प्रशिक्षण प्राप्त कर अग्रसर होता है। यह एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से विद्यार्थी युक्तिपूर्ण ढंग से तर्क–वितर्क, चिंतन बोध एवं स्पष्टीकरण करने की योग्यता अर्जित करता है। इस प्रकार से शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास कर उन्हें समाज के अनुकूल बनाना है। शिक्षा मनुष्य को पाशविक प्रवृत्तियों से ऊँचा उठाने का कार्य करती है। प्रकृति के नियम के अनुसार कोई भी दो व्यक्ति एक समान नहीं होते अर्थात् व्यक्तिगत भिन्नता दृष्टिगत होती है। विद्यालयी शिक्षा ग्रहण करने वाले सभी विद्यार्थी भी समान क्षमता वाले नहीं होते हैं। कुछ विद्यार्थी सामान्य से भिन्न होते हैं, इन बालकों में कुछ प्रतिभाशाली बालक, सृजनशील बालक, मानसिक दुर्बल बालक, पिछड़ा बालक, समस्याग्रस्त बालक, कुसमायोजित बालक, विकलांग बालक, दृष्टिबाधित बालक, मूक बधिर बालक आदि होते हैं। ये सभी बालक अपनी विशिष्टता के कारण विशिष्ट बालकों की श्रेणी में आते हैं।

विशिष्ट बालक अर्थ एवं परिभाषा

ऐसे बालक जो शारीरिक, सामाजिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं नैतिक रूप से सामान्य बालकों से अलग है तथा जो समाज के सामान्य मापदण्डों के अनुसार व्यवहार नहीं करते तथा समाज में समायोजन नहीं कर पाते, विशिष्ट बालक कहलाते हैं।

मूकबधिर बालक

ऐसे बालक जो बोल एवं सुन नहीं पाते, मूकबधिर बालक कहलाते हैं। ऐसे बालकों को विशेष रूप से प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है और तत्पश्चात् इनको सामान्य स्कूलों में प्रवेश दिया जा सकता है। इनके लिए सांकेतिक भाषा व श्रवण यंत्रों की आवश्यक होती है। जिससे इन्हें समझने, सुनने और अपना कार्य करने में सहायता मिलती है। श्रवण शक्ति खो चुके बालकों को विशिष्टता के आधार पर विशिष्ट बालकों का वर्गीकरण शारीरिक रूप से विकलांग बालक मानसिक रूप से विकलांग बालक प्रतिभाशाली बालक सृजनशील बालक सामाजिक रूप से पिछड़े बालक संवेगात्मक दृष्टि से पिछड़े बालक सीखने की दृष्टि से पिछड़े बालक धीमी गति से सीखने वाले बालक श्रवण—यंत्र और प्रशिक्षण की जरूरत होती है। इस प्रकार से बालकों को सुनने के साथ—साथ वस्तुएँ दिखाकर शिक्षा दी जानी चाहिए। इनके लिए विशेषज्ञों की सहायता ली जानी चाहिए। मूकबधिर विद्यार्थियों के लिए इनके अनुकूल विशिष्ट विद्यालयों की आवश्यकता होती है। इन विद्यालयों में मूक—बधिर विद्यार्थियों के लिए सम्प्रेषण तकनीकों का प्रयोग किया जाता है।

समायोजन

जीवन में व्यक्ति की अनन्त, अगणित इच्छाएँ—आवश्यकताएँ होती हैं। वह इन इच्छाओं को जो चाहे दैहिक—भूख, प्यास आदि कामनाओं की तुष्टि सम्बन्धी हों या स्नेह सुरक्षा जैसी मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएँ हों, के समाधान हेतु सतत् प्रयास करता है। व्यक्ति के जीवन में आवश्यकताएँ अथवा इच्छापूर्ति न होने पर व्यक्ति व्यग्र हो उठता है, उसके मन में द्वन्द्व एवं तनाव उत्पन्न हो जाते हैं, यही नहीं व्यक्तित्व में असन्तुलन की स्थिति भी आ जाती है। तनाव की इस स्थिति को दूर करने के लिए व्यक्ति प्रयासरत हो जाता है। वह अपनी योग्यता, क्षमता और स्थिति का मूल्यांकन करता है, द्वन्द्व—तनाव—असफलता के कारणों को समझने, उनका निवारण करने एवं परिवर्तित परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करता है, यही समायोजन है अर्थात् लक्ष्य प्राप्ति के लिए परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाना या परिस्थितियों के अनुकूल हो जाना ही समायोजन है। समायोजन में मुख्यत: सामाजिक समायोजन, शैक्षिक समायोजन, संवेगात्मक समायोजन एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी समायोजन आदि को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है।

समस्या का औचित्य

राज्य के शैक्षिक पिछड़ेपन के कारण सभी सामान्य बालकों की शैक्षिक ढ़ाचे तक पहुँच नहीं है, विशिष्ट बालकों की शिक्षा के सम्बन्ध में स्थिति अत्यंत निराशाजनक है। विशिष्ट बालकों की शिक्षा के लिए न पर्याप्त विशिष्ट विद्यालय हैं, न प्रशिक्षित अध्यापक और न ही भौतिक संसाधन उपलब्ध हैं। इन विशिष्ट बालकों के वर्ग में एक बड़ी संख्या मूक बधिर बालकों की है मूकबधिर विद्यार्थी न तो बोल पाते हैं और न ही सुन पाते हैं जिससे ये समाज में अपने विचारों का आदान—प्रदान करने में असमर्थ होते हैं। ये अपने आसपास के वातावरण, परिवार एवं मित्र मण्डली के साथ उचित सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते हैं एवं समाज की मुख्य धारा से नहीं जुड पाते हैं, फलत: ये कुसमायोजित हो जाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उनका समाज के प्रति दृष्टिकोण नकारात्मक हो जाता है। यद्यपि सरकार द्वारा मूकबधिर विद्यार्थियों के लिए पृथक विद्यालयों की स्थापना की गई है, विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण प्रोत्साहन एवं छात्रवृत्ति योजनाएँ चलाई जा रही हैं व्यावसायिक प्रशिक्षण के साधन उपलब्ध कराए जा रहे हैं तथापि ये सारे प्रयास इन विद्यार्थियों की समस्याओं का उचित समाधान कर उनका दृष्टिकोण सकारात्मक बनाने में आशानुरूप सफल नहीं रहे हैं। इस दिशा में सर्वप्रथम आवश्यकता इस

बात की है कि मूकबधिर विद्यार्थियों को भलीभाँति समझा जाए, उनकी आवश्यकताओं को पहचाना जाए, उनके समायोजन, को ज्ञात किया जाए ताकि इन समस्याओं को ज्ञात कर उनका उचित समाधान ढूँढ़ा जाए।

समस्या कथन

मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

शोध समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या

मूकबधिर छात्र एवं छात्रायें

प्रस्तुत अध्ययन में मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं से आशय ऐसे छात्र एवं छात्राओं से है जो श्रवण शक्ति और वाणी शक्ति खो चुके हैं और मूकबधिर विद्यालयों में अध्ययनरत हैं।

समायोजन

लक्ष्य प्राप्ति के लिए व्यक्ति द्वारा अनुकूल व प्रतिकूल परिस्थिति में वातावरण के साथ सांमजस्यपूर्ण व्यवहार समायोजन कहलाता है। प्रस्तुत अध्ययन में समायोजन से तात्पर्य मूक बधिर विद्यार्थियों के सामाजिक, संवेगात्मक, शैक्षिक व स्वास्थ्य सम्बन्धी समायोजन से है।

सम्बन्धित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

शोधार्थी द्वारा प्रयुक्त शोध में पूर्व में हुए शोधों का अध्ययन शोध से सम्बन्धित आयामों जैसे समायोजन से सम्बन्धित साहित्य का प्रस्तुतिकरण एवं विवेचना अग्रांकित क्रम में की गई है—

धारा, रणजीत व प्रणब (2020) ने अपना शोध पत्र **'पश्चिम बंगाल राज्य में विकलांग छात्रों की हीन भावना, समायोजन समस्या और शैक्षणिक प्रदर्शन'** विषय पर प्रस्तुत किया। वर्तमान अध्ययन के माध्यम से, यह पाया गया है कि विशेष विद्यालयों के दिव्यांग छात्रों की हीन भावना सामान्य विद्यालयों के दिव्यांग छात्रों की तुलना में तुलनात्मक रूप से अधिक है और विशेष विद्यालयों के दिव्यांग छात्रों की समायोजन समस्या तुलनात्मक रूप से अधिक है। सामान्य स्कूलों के दिव्यांग छात्रों की तुलना में अधिक। एक ही लडके की हीन भावना और समायोजन समस्या विकलांग छात्राओं की तुलना में अधिक होती है। इस अध्ययन में पाया गया कि 13 से 18 आयु वर्ग के दिव्यांग छात्रों में हीन भावना तुलनात्मक रूप से अन्य आयु समूहों के दिव्यांग छात्रों की तुलना में अधिक है और इस आयु वर्ग से कम आयु वर्ग के दिव्यांग छात्रों में समायोजन की समस्या अधिक है। समूह 13 पश्चिम बंगाल राज्य में आयु के अन्य समूहों के दिव्यांग छात्रों की तुलना में तुलनात्मक रूप से अधिक है। वर्तमान अध्ययन से पता चलता है कि कक्षा ट से टप् के बीच के दिव्यांग छात्रों की हीन भावना और समायोजन समस्या कक्षा के अन्य समूहों के दिव्यांग छात्रों की तुलना में तुलनात्मक रूप से अधिक है। वर्तमान अध्ययन इस बात का भी समर्थन करता है कि दृष्टिहीन दिव्यांग छात्रों में हीन भावना तुलनात्मक रूप से अधिक होती है और दिव्यांग छात्र जो बधिर होते हैं उनकी समायोजन समस्या अन्य प्रकार के दिव्यांग छात्रों की तुलना में तुलनात्मक रूप से अधिक होती है। वर्तमान अध्ययन में यह भी दर्शाया गया है कि पश्चिम बंगाल राज्य में दिव्यांग छात्रों, भाइयों और बहनों की संख्या तीन से ऊपर है, उनमें हीन भावना अधिक है और उनकी समायोजन समस्या अधिक है।

मिशार एट अल. (2014) ने अपना शोध पत्र **'विकलांग बच्चों की शैक्षिक स्थिति का विश्लेषण करने और स्कूलों में उनके नामांकन, प्रतिधारण और सफलता को बढावा देना'** विषय पर प्रस्तुत किया। अध्ययन में

बच्चों के स्कूल से बाहर रहने के पीछे आठ अलग—अलग कारण पाए गए। वे माता—पिता की चेतना के निम्न स्तर के थेय माता—पिता से संबंधित समस्याएं जैसे प्रवासन, लापरवाही, आदिय घर से स्कूल की बहुत दूरीय संसाधन वर्ग और विशेष विद्यालयों के प्रचार की कमीय और भौगोलिक जटिलता. इस अध्ययन में स्कूल में नामांकन, ठहराव और सफलता को बढावा देने वाले कुछ कारक भी पाए गए हैं। नामांकन के लिए ऐसे प्रोत्साहन कारक थे स्कूल में पढने के लिए बच्चों की रुचिय मैत्रीपूर्ण स्कूल संरचना और सीखने के माहौल को अक्षम करना, प्रवेश अभियान—घर का दौरा, परामर्श, जागरूकता बढाना, सामुदायिक गतिशीलता, अच्छी सुविधा वाले छात्रावास का प्रावधान, बच्चों को नि:शुल्क वाहन सहायता, विकलांगता—विशिष्ट कौशल—आधारित शिक्षण सामग्रीय बच्चों को उनकी विकलांगता के आधार पर प्रोत्साहन और माता—पिता को पुरस्कार और दंड दोनों।

डेरोजियर, मेलिसा एवं लायड, स्टेंसी (2011) ने **'द इम्पेक्ट ऑफ चिल्ड्रन्स सोशल एडजेस्टमेन्ट आन एकेडेमिक आउटकम का अध्ययन'** विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य शैक्षिक क्रियाकलापों के पूर्व एवं पश्चात के परिणामों की भविष्यवाणी में सामाजिक समायोजन के प्रभाव की जाँच करना था। अध्ययन में 1255 तृतीय श्रेणी के बच्चों के लिए शिक्षकों, विद्यालयी अभिलेख, स्वप्रतिवेदन के माध्यम से प्रदत्तों कोएकत्रित किया गया। सामाजिक समायोजन के मापन में सामाजिक स्वीकृति और साथियों के आक्रमण को सम्मिलित किया गया। अध्ययन के परिणामस्वरूप प्राप्त हुआ कि शैक्षणिक समायोजन के प्रत्येक क्षेत्र की भविष्यवाणी में सामाजिक समायोजन के दोनों रूपों का स्वतन्त्र रूप में योगदान पाया जा सकता है। परिणामों में लिंगभेद एवं विशेष रूप से शैक्षणिक समायोजन पर आक्रमण का प्रभाव पाया गया।

गालवे, तान्या एम. एण्ड मेट्सला, जेमी एल. (2011) ने **'सोशल कॉगनिशन एण्ड इट्स रिलेशन टू साइकोलॉजिकल एडजेस्टमेन्ट इन चिल्ड्रन विथ 42 नॉन वर्बल लर्निंग डिसएबिलिटीज का अध्ययन'** विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य सामाजिक संज्ञान कौशल के सम्बन्ध में अशाब्दिक अधिगम अयोग्य बच्चों की सामान्य बच्चों के साथ तुलना करना तथा सामाजिक संज्ञान कौशल और मनोवैज्ञानिक समायोजन के मध्य सम्बन्ध को जानना था। अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में सामने आया कि अशाब्दिक अधिगम अयोग्य बच्चों की मनोवैज्ञानिक समायोजन की समस्या में योगदान देने वाले अशाब्दिक सामाजिक शब्दों की एनकोडिंग व व्याख्या की अपेक्षा सामाजिक संज्ञान की कमियाँ अधिक व्यापक रूप में बताई गई।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य

1- मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2- मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3- मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4- मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पना

1- मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

2- मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

3- मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

4- मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तुत शोध में जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मेरठ शहर में स्थिति मूकबधिर विद्यालय, 221, रेसकोर्स रोड़, मेरठ कैन्ट के कक्षा 7 एवं 8 में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं को ही चयनित किया गया। शोध में न्यादर्श का चयन उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श विधि द्वारा किया गया।

प्रस्तुत शोध की शोध विधि

वर्तमान शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा मूकबधिर विद्यालय में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करने के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा निर्मित समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधि

प्रस्तुत शोध में मध्यमान, मानक विचलन एवं टी—परीक्षण की गणना के आधार पर प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण किया गया है।

विश्लेषण एवं विवेचन

निर्धारित किये उददे्श्यों एवं परिकल्पनाओं के अनसुार परीक्षण में प्राप्त आँकड़ों का क्रमवार विश्लेषण निम्न प्रकार है। आँकड़ों का विश्लेषण उददे्श्यों के अनुकूल प्रश्नावली के अनुसार किया गया है।

परिकल्पना

1- मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका—1

मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन की तुलना

	वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी—मूल्य	सार्थकता स्तर
समायोजन	**छात्र**	40	21.01	3.82	**1.980**	**सार्थकता स्तर 0.05**
	छात्रायें	40	22.54	3.05		

तालिका 1 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन से सम्बन्धित आंकड़ों में छात्रों का मध्यमान 21.01 तथा मानक विचलन 3.82 प्राप्त हुआ तथा छात्राओं से सम्बन्धित आंकड़ों का मध्यमान 22.54 तथा मानक विचलन 3.05 प्राप्त हुआ। मध्यमान का अवलोकन करने पर छात्राओं के समायोजन का मान अधिक पाया गया।

प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी—मूल्य **1.980** प्राप्त हुआ। जो सार्थकता के स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 78 पर सारणी में दिए गए टी— मूल्य के मान 0.05 पर 1.98 के समान है। अत: शून्य परिकल्पना **'मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है' अस्वीकृत की जाती है।** विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में असमानता होती है।

परिकल्पना

2- मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका—2

मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन की तुलना

	वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी—मूल्य	सार्थकता स्तर
सामाजिक समायोजन	**छात्र**	40	21.26	4.79	**2.268**	**सार्थक 0.05**
	छात्रायें	40	23.53	4.14		

तालिका 2 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन से सम्बन्धित आंकड़ों में छात्रों का मध्यमान 21.26 तथा मानक विचलन 4.79 प्राप्त हुआ तथा छात्राओं से सम्बन्धित आंकड़ों का मध्यमान 23.53 तथा मानक विचलन 4.14 प्राप्त हुआ। मध्यमान का अवलोकन करने पर छात्राओं के सामाजिक समायोजन का मान अधिकतम पाया गया।

प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी—मूल्य **2.268** प्राप्त हुआ। जो सार्थकता के स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 78 पर सारणी में दिए गए टी— मूल्य के मान 0.05 पर 1.98 से अधिक है। अत: शून्य परिकल्पना **'मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है' अस्वीकृत की जाती है।** विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन में असमानता होती है।

परिकल्पना

3- मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका—3

मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन की तुलना

	वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी—मूल्य	सार्थकता स्तर
शैक्षिक समायोजन	**छात्र**	40	23.11	3.23	**1.071**	**असार्थक**
	छात्रायें	40	23.96	3.84		

तालिका 3 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन से सम्बन्धित आंकड़ों में छात्रों का मध्यमान 23.11 तथा मानक विचलन 3.23 प्राप्त हुआ तथा छात्राओं से सम्बन्धित आंकड़ों का मध्यमान 23.96 तथा मानक विचलन 3.84 प्राप्त हुआ। मध्यमान का अवलोकन करने पर छात्राओं के शैक्षिक समायोजन का मान अधिकतम पाया गया।

प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी—मूल्य **1.071** प्राप्त हुआ। जो सार्थकता के स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 78 पर सारणी में दिए गए टी— मूल्य के मान 0.05 पर 1.98 से अधिक है। अत: शून्य परिकल्पना **'मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है' स्वीकृत की जाती**

है। विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में समानता होती है।

परिकल्पना

4- मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका—4

मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन की तुलना

	वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी—मूल्य	सार्थकता स्तर
संवेगात्मक समायोजन	**छात्र**	40	18.56	2.32	**2.471**	**सार्थक 0.05**
	छात्रायें	40	17.34	2.09		

तालिका 4 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन से सम्बन्धित आंकड़ों में छात्रों का मध्यमान 18.56 तथा मानक विचलन 2.32 प्राप्त हुआ तथा छात्राओं से सम्बन्धित आंकड़ों का मध्यमान 17.34 तथा मानक विचलन 2.09 प्राप्त हुआ। मध्यमान का अवलोकन करने पर छात्रों के संवेगात्मक समायोजन का मान अधिकतम पाया गया।

प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी—मूल्य **2.471** प्राप्त हुआ। जो सार्थकता के स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 78 पर सारणी में दिए गए टी—मूल्य के मान 0.05 पर 1.98 से अधिक है। अत: शून्य परिकल्पना **'मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है' अस्वीकृत की जाती है।** विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन में असमानता होती है।

निष्कर्ष

परिणामों के विश्लेषण के पश्चात यह कहा जा सकता है कि मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं में समायोजन के विभिन्न क्षेत्रों शैक्षिक एवं संवेगात्मक समायोजन में असमानता पायी गयी हैं। जबकि सामाजिक, समायोजन में समानता पायी जाती है। अध्ययन के अन्तर्गत आंकड़े संग्रहण के दौरान शोधार्थी ने पाया कि सभी मूकबधिर छात्र एवं छात्राओं का शैक्षिक वातावरण समान है तथा शिक्षकों द्वारा अपनायी जाने वाली शिक्षण प्रक्रिया, पाठ्य—सहगामी क्रियाकलाप समान होने के कारण सभी मूकबधिर छात्र एवं छात्रायें एक—दूसरे के साथ सहयोग कर अपने अधिगम सम्बन्धी कार्यों को पूर्ण करते हैं। सभी के साथ विद्यालय का वातावरण समान है परन्तु व्यक्तिगत विभिन्नताओं के कारण छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में विभिन्ताओं का पाया जाना स्वाभाविक है। प्रत्येक विद्यार्थी की अपनी व्यक्तिगतता एवं अलग अधिगम क्षमता होती है साथ ही समायोजन भी विद्यार्थी के व्यक्तिगत गुणों पर निर्भर करता है जिससे समायोजन के विभिन्न क्षेत्रों में असमानता पायी जाती है।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1- एनोनिमस (1982). मानसिक स्वास्थ्य. पाकिस्तान मेडिकल रिसर्च काउंसिल, इस्लामाबाद, 2(3), 118–122.

2- गालवे, तान्या एम. एण्ड मेट्सला, जेमी एल. (2011). सोशल कॉगनिशन एण्ड इट्स रिलेशन टू साइकोलॉजिकल एडजेस्टमेन्ट इन चिल्ड्रन विथ नॉन वर्बल लर्निंग डिसएबिलिटीज. http:// Idx.sagepub.com/ contect/44/1/33 abstract.

3- डेरोजियर, मेलिसा एवं लायड, स्टेंसी (2011). द इम्पेक्ट ऑफ चिल्ड्रन्स सोशल एडजेस्टमेन्ट आन एकेडेमिक आउटकम. एज्यूट्रक्ट्स नीलकमल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 10(3), 10-12

4- धारा, रणजीत व प्रणब (2020). पश्चिम बंगाल राज्य में विकलांग छात्रों की हीन भावना, समायोजन समस्या और शैक्षणिक प्रदर्शन. इण्डियन एजुकेशनल एब्सट्रेक्ट्स, 4(1), 72-73.

5- पाण्डेय, बृजेश कुमार (2012). समावेशी शिक्षा. भारती पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, फैजाबाद, 1 (1), 88

6- मानविकी सामाजिक विज्ञान समीक्षाएँ (2020). e-ISSN: 2395–6518, 8(3), 1383–1394

7- मास्लो, ए.एच. (1954). प्रेरणा और व्यक्तित्व. न्यूयॉर्क 3(2), 404-413.

8- मिशार एट अल. (2014). विकलांग बच्चों की शैक्षिक स्थिति का विश्लेषण करने और स्कूलों में उनके नामांकन, प्रतिधारण और सफलता को बढावा देना. इण्डियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी एण्ड एजुकेशन, 40(182), 15-17

9- शर्मा, आर. ए. (2008). विशिष्ट शिक्षा का प्रारूप. मेरठ : आर. लाल बुक डिपो, 1(1), 94